SCA
Shakti's Classes for Ayurveda
Chiseling the Brilliants

SINCE 2011 IN VARANASI

SHAKTI'S CLASSES for AYURVEDA

A Complete Centre for MD/MS(AIAPGET.), MO (UPSC & PSC), Other Ayurvedic Entrance Examination and Foundation Courses for Proff. I, II & III

Kaumaryabhritta & Kashyap Samhita

By
Dr. Shakti Raj Rai
9452376134

कौमारभृत्य

Dr. Shakti Raj Rai

निरुक्ति व परिभाषा

- ''कुमारस्य भरणमधिकृत्य कृतं कौमारभृत्यम्'' (चक्रपाणि)

  (कुमारों के भरण (पोषण) के लिए जो तंत्र है, वही कौमारभृत्य है।)

- कौमार्यभृत्यं नाम कुमारभरण धात्रीक्षीरदोषसंशोधनार्थं दुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानाञ्च व्याधिनाम् उपशमनार्थम्।। (सुश्रुत)
- गर्भोपक्रम विज्ञानं सुतिकोपक्रम स्तथा। बालानां रोगशमनी क्रिया बाल चिकित्सम्। (हारीत)
- सुश्रुत संहिता की टीका करते हुए चक्रपाणि ने निरुक्ति को इस प्रकार कहा -
  - "कुमाराणां भृतिर्धारणं पोषणं च, तस्येदमिति कौमारभृत्यम्"

  (कुमार की सेवा, धारण व पोषण जिस तंत्र में वर्णित है, वही कौमारभृत्य है।)

कौमारभृत्य का अष्टांग में महत्व

- कौमारभृत्य को आठों तंत्रों में आद्य रूप में कहा गया है जैसे देवताओं में 'हवि' लेने के कारण 'अग्निदेव' प्रधान हैं।
  - कौमारभृत्यमष्टानां तन्त्राणामाद्यमुच्यते।
    आयुर्वेदस्य महतो देवानामिव हव्ययः।। (काश्यप)
- अन्य आचार्य के अनुसार कौमारभृत्य का अष्टांग में स्थान

  चरक - 6वॉ स्थान

  सुश्रुत - 5वॉ स्थान

  वाग्भट्ट - द्वितीय स्थान

काश्यप संहिता – 6- 7वीं शताब्दी, इसे 'वृद्धजीवकतंत्र' भी कहते है।

उपदेष्टा	काश्यप
तंत्रकर्ता	बृद्धजीवक (कुमारभच्च)
प्रतिसंस्कर्ता	वात्स्य
उपोद्धात	हेमराजशर्मा द्वारा लिखा गया।

Shakti's Classes for Ayurveda

आयुर्वेद अवतरण -

ब्रह्मा ⟶ प्रजापति ⟶ अश्विनी कुमार ⟶ इन्द्र ⟶ कश्यप, वशिष्ट, अत्रि, भृगु

↓

वात्स्य ⟵ अनायास यक्ष ⟵ बृद्धजीवक ⟵ जीवक

- कुल अध्यायों की संख्या 120 है एवं खिलस्थान में 80 अध्याय है। काश्यप संहिता में कुल 15 आचार्यों का वर्णन है।

कौमारभृत्य के प्रमुख ग्रंथ व रचनाकार -

- **बालतंत्र** - कल्याण वैद्य **(नैपाल निवासी)**
- **शिशुरक्षारत्न** - पृथ्वीमल्ल
- **बाल कुमार तंत्र** - रावण
- **कुमारतंत्र** - यामिनी भूषण
- **कुमार रत्न समुच्चय** - डॉ0 रमानाथ द्विवेदी
- **अभिनव कौमारभृत्य** - राधानाथ
- **कौमारभृत्यम्** - रघुवीर प्रसाद द्विवेदी

- प्रसवोपरान्त बालक का पोषण, धात्री-परीक्षा, स्तन्य विज्ञान, समस्त शिशु रोगों का ज्ञान व उसका निवारण तथा बालग्रहों का ज्ञान कौमारभृत्य कहलाता है। (कौमारभृत्यम्)
- इसके अतिरिक्त पर्वतक तंत्र, हिरण्याक्ष तंत्र, बंधक तंत्र व योगसुधानिधि भी कौमारभृत्य के ग्रंथ है।

सामान्य चिकित्सा (औषधि मात्रा)

सुश्रुतमतानुसार –

मृदु व छेदनीय औषधि का प्रयोग

- **क्षीरप (1 माह से उपर)** - पर्वद्वय ग्रहण संमिता (अंगुली के दो पोरो में आने वाली औषधि)
- **क्षीरान्नाद** - कोलास्थिसम
- **अन्नाद** - कोलसम

काश्यपानुसार -

- **नवजात शिशु** - विडंगफल मात्रा मधु-घृत के साथ, वय के अनुसार मात्रा बढ़ती है लेकिन आमलक प्रमाण से अधिक नहीं होनी चाहिए।

Shakti's Classes for Ayurveda

- ❖ आठ मास तक के बालक को रोगानुसार स्नेह का चतुर्थांश औषधि देना चाहिए। इसके उपरान्त जल में घुली औषधि देना चाहिए। स्नेह की मात्रा का वर्णन निम्नवत् है -

वय व स्नेह की मात्रा (घृत)

नवजात शिशु	छोटी कोलास्थिसम
1 माह	कोलसम
3 माह	द्विकोलसम
4 माह	शुष्कामलक
5-6 माह	आर्द्रामलक
7-8 माह	इससे कुछ अधिक

- ➢ औषधि कल्क से लिप्त स्तन बालक को पिलावें - सुश्रुत
- ➢ औषधि कल्क को 1 मुहुर्त रखकर, धोकर स्तन बालक को पिलावें - अष्टांग हृदय

शारंगधर तथा योग रत्नाकर के अनुसार -

1 मास के बालक - 1 रत्ती (प्रतिमास 1-1 रत्ती बढ़ाते है)

12 मास के बालक - 12 रत्ती (1 माशा)

- ➢ 1 वर्ष का बालक - 1 माशा
- ➢ 16 वर्ष का बालक - 16 माशा (प्रतिवर्ष 1-1 माशा बढ़ाते है)
- ➢ यही 16 माशा 70 वर्ष तक रहता है।

उपरोक्त मात्रा कल्क, चूर्ण व अवलेह के लिए है लेकिन क्वाथ व स्वरस की मात्रा 4 गुना होती है।

विश्वामित्र के अनुसार –

नवजात शिशु	विडंग मात्रा
क्षीरप	कोलास्थि
क्षीरान्नाद	कोल
अन्नाद	उदुम्बर

Shakti's Classes for Ayurveda

वय का विभाजन

चरक संहिता –

- **बाल्यावस्था –** 0-30 वर्ष
- **मध्यावस्था –** 30-60 वर्ष
- **जीर्णावस्था –** 60-100 वर्ष

बाल्यावस्था

- **1- 16 वर्ष -** अपरिपक्वधातुमजात व्यञ्जनं, सुकुमारमक्लेशसहमसंपूर्णवातश्लेष्मधातुप्रायमाषोडशवर्ष।
- **30 वर्ष तक -**विवर्धमानधातुगुणं पुनः प्रायेणानवस्थितसत्वमात्रिंशद्वर्षमुदिष्टं।

भावमिश्र

- **बाला** - 0-16 वर्ष
- **तरुणी** - 16-32 वर्ष
- **प्रौढ़** - 32-50 वर्ष

सुश्रुत संहिता

बाल्यावस्था	मध्यावस्था	वृद्धावस्था
क्षीरप - 0-1 वर्ष	वृद्धि – 16-20 वर्ष	70 से मृत्युपर्यन्त
क्षीरान्नाद – 1-2 वर्ष	यौवन – 20-30 वर्ष	
अन्नाद – 2-16 वर्ष	सम्पूर्णता – 30-40 वर्ष	
	हानि – 40-70 वर्ष	

काश्यप संहिता -

- **गर्भावस्था -** जन्म तक
- **बाल्यावस्था -** 1 वर्ष तक
- **कुमार -** 16 वर्ष तक
- **यौवन –** 16-34 वर्ष तक
- **मध्यमावस्था –** 34-70 वर्ष तक
- **वृद्धावस्था -** 70 से मृत्यु तक

Shakti's Classes for Ayurveda

हारीत संहिता -

- **बाल्यावस्था -** 16 वर्ष तक
- **युवावस्था -** 25 वर्ष तक
- **मध्यमावस्था -** 70 वर्ष तक
- **वृद्धावस्था -** 70 वर्ष के बाद

बाला- 5 वर्ष मुग्धा- 11 वर्ष पौढ़ा- 20 वर्ष प्रगल्भा- 33 वर्ष

- पुरुष जीवन की सर्वोत्तम आयु – 25-50 वर्ष
- स्त्री जीवन की सर्वोत्तम आयु – 24-37 वर्ष
- बाल्यावस्था श्रेष्ठ तथा वृद्धावस्था को हीन माना गया है

पराशर स्मृति में बाला के 4 भेद किया है -

गौरी-8 वर्ष रोहिणी-9 वर्ष कन्या-10 वर्ष रजस्वला-10 वर्ष से अधिक

- **जातिहार -** तुरन्त जन्मे बालक
- **सद्यःजात –** 1-7 दिन तक
- **पोगण्ड -** 5 से 10 वर्ष या 16 वर्ष के बालक को कहते है।

****

Shakti's Classes for Ayurveda

नवजात शिशु परिचर्या

प्रथम परिचर्या- चरक-प्राणप्रत्यागमन, सुश्रुत- उल्वापरिमार्जन, वाग्भट्ट- उल्वापरिमार्जन

प्राणप्रत्यागमन

'क्लेशविहतान् प्रणान् पुनर्लभेत्'

(प्रसव में, कष्ट से पीड़ित बालक के प्राण को पुनः बलेष्ट करने हेतु किया जाता है।)

चरकानुसार

- अश्मनोः संघट्टनं कर्णयोर्मूले।
- शीतोदकेनोष्णोदेन वा मुखपरिषेकः।
- चेष्टा के आभाव में कृष्ण कपालिका शूर्प से वायु करते है।

अष्टांगहृदय

- उल्वापरिमार्जन हेतु सैंधव तथा घृत का प्रयोग किया जाता है।
- बला तैल का अभ्यंग।
- अश्मनोर्वादन चास्य कर्णमूले समाचरेत्।
- दक्षिणो कर्णे मन्त्रमुच्यारयेत।

मंत्र - अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयाभिजायसे।
आत्मा वै पुत्रानामाऽसि संजीव शारदां शतम्।। **(अष्टांगहृदय)**

नाभिनाल छेदन

चरकानुसार - नाभिबंधनात् प्रभृत्यष्टांगुलमभिज्ञानं कृत्वा छेदनावकाशस्य द्वयोरन्तरयोः शनैर्गृहीत्वा।

- नाभिनाल में नाभि से 8 अंगुल छोड़ चिन्ह लगाते है।
- स्वर्ण, रजत या लौह से बने अर्धधार शस्त्र द्वारा छेदन करते हैं।
- अग्रभाग को सूत्र से बांध कर कण्ठ में बांध देते है।
- नाभिपाक होने पर लोध्र, प्रियंगु, सुरदारु, हरिद्रा तथा मुलेठी कल्क से साधित से तैल से अभ्यंग तथा उससे अवचूर्णन करना।

सुश्रुतानुसार - 8 अंगुल पर एक सूत्रबंधन फिर छेदन करते है।

''ततो नाभिनाड़ीमष्टाङ्गुलमायम्यसूत्रेण बद्धवा छेदयेत्''

Shakti's Classes for Ayurveda